"निदेशक"

ऊंचाइयां छूने को तैयार रहें वाई-16

आईआईटी में नए छात्रों को निदेशक व डीन ने किया संबोधित

कानपुर, जागरण संवाददाता : आईआईटी में पहला कदम रखने वाले छात्रों के लिए गुरुवार का दिन यादगार रहा। हो भी क्यों न, देश के अग्रणी तकनीकी शिक्षण संस्थान में पढ़ने का सबसे बड़ा लक्ष्य जो पूरा हो रहा था। बीटेक के इन नए छात्रों के लिए आईआईटी में गुरुवार को ओरिएंटेशन प्रोग्राम का आयोजन किया गया।

इसमें निदेशक प्रो. इंद्रानिल मन्ना ने छात्रों को संबोधित करते हुए कहा कि वे आसमान की ऊंचाई छूने के लिए तैयार रहें। यहां मिलने वाली आधुनिक सुविधाओं के जरिए वे पढ़ाई से लेकर खेलकूद इन सभी क्षेत्रों में वे खुद को निखार सकते हैं। इन छात्रों के ग्रुप को वाई-16 नाम दिया गया।

चार साल की पढ़ाई में उन्हें अपने मनपसंद क्षेत्र में आगे बढ़ने का भरपूर मौका मिलेगा। अपनी क्षमता को सामने लाने के लिए उन्हें इस समय अंतराल में कई अवसर मिलेंगे। छात्रों के साथ आए उनके अभिभावकों ने इस दौरान अपनी जिज्ञासाओं को शांत करने के लिए कई प्रश्न भी पूछे। उनके प्रश्नों का जवाब देते हुए आईआईटी के वरिष्ठ अधिकारियों ने कहा कि यहां पर आपका बेटा व बेटी उसी तरह रहेंगे जैसे अपने घर में रहते थे। यह उनका नया घर है जहां पर उन्हें अपना भविष्य संवारने का भरपूर मौका मिलेगा। ओरिएंटेशन प्रोग्राम में आठ सौ से अधिक छात्रों ने भाग लिया। इस दौरान डीन एआर हरीश, काउंसलिंग हेड प्रो. एमके घुरई व प्रोफेसर गुरु मूर्ति नीलकंठन ने भी छात्रों को संबोधित किया।

ओरियंटेशन में छात्रो को संबोधित करते प्रो. गुरुमूर्ति नीलकंठन। जागरण

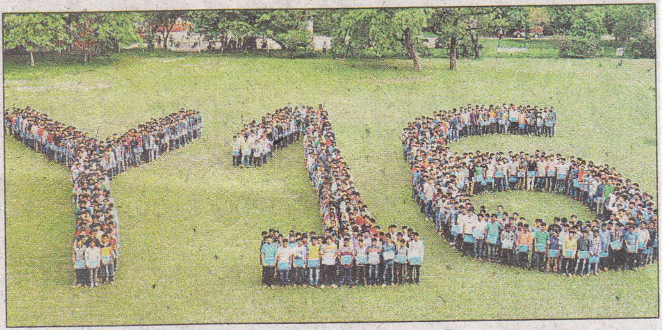

आईआईटी के ओरिएंटेशन के दौरान वर्ष 2016 बैच के छात्रों ने बनाया वाई 16।

शाम तक रिपोर्ट करने के लिए आते रहे छात्र

कश्मीर व दूर शहरों से आने वाले छात्रों ने शाम तक रिपोर्ट की। छात्रावास आवंटित होने के बाद वे ओरिएंटेशन प्रोग्राम में भाग लेने के लिए सभागार पहुंचे। छात्रों की संख्या अधिक होने के कारण ओरिएंटेशन प्रोग्राम का आयोजन कई चरणों में किया गया। जबकि शाम को सभागार के पास खुले मैदान में उन्हें शिक्षक व वरिष्ठ छात्रों ने संबोधित करके आईआईटी के बारे में पूरी जानकारी दी।

अब हिंदी की खबरें अंग्रेजी में भी पढ़ें
www.jagranpost.com

दैनिक जागरण 22-07-2016

प्रदूषण मुक्त दौड़ेंगे डीजल के वाहन

- आईआईटी वैज्ञानिकों ने एमएचआरडी को भेजा प्रोजेक्ट
- कोयले के गैसीफाई रिएक्शन से निकलेगी कार्बन मोनो ऑक्साइड व हाइड्रोजन गैस

कानपुर, जागरण संवाददाता : नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल (एनजीटी) ने प्रदूषण खत्म करने को जहां दिल्ली एनसीआर में 15 साल पुराने डीजल वाहनों पर रोक लगाने का फरमान जारी कर दिया है वहीं आईआईटी कानपुर के वैज्ञानिक डीजल वाहनों से प्रदूषण कम करने की तकनीक तलाशने में जुट गए हैं। आईआईटी के वैज्ञानिकों ने कोयला जलने से होने वाले प्रदूषण को खत्म करने का प्रस्ताव तैयार करके मानव संसाधन विकास मंत्रालय को भेज दिया है। इस प्रस्ताव के अंतर्गत कोयला जलने से प्रदूषण नहीं होगा जबकि इससे निकलने वाली गैसों के वैज्ञानिक रिएक्शन से डाई मिथाइल ईथर भी तैयार किया जा सकेगा जिसे डीजल में मिलाकर प्रदूषण कम किया जा सकता है।

अगर इस प्रस्ताव पर काम आगे बढ़ता है तो डीजल जलने से होने वाले प्रदूषण को काफी हद तक कम किया जा सकेगा। मैकेनिकल इंजीनियरिंग विभाग के असिस्टेंट प्रोफेसर डा. शांतनु डे ने 'इंटीग्रेटेड गैसीफिकेशन कंबाइंड साइकिल' का यह प्रस्ताव तैयार किया है। डा. डे बताते हैं कि पावर प्लांट में बिजली बनाने के लिए कोयले को जलाने की पद्धति बहुत पुरानी है। इस पद्धति में कोयला जलने के साथ ही वायुमंडल में प्रदूषण फैलता है।

उन्होंने जो तकनीक इजाद की है उससे कोयले को स्टीम के जरिए धीरे-धीरे जलाया जा सकता है। इससे प्रदूषण का खतरा पूरी तरह खत्म होने के साथ इससे निकलने वाली कार्बन मोनो ऑक्साइड व हाइड्रोजन गैस का इस्तेमाल गैस टरबाइन चलाने में किया जा सकता है।

20 फीसद तक डीजल में मिलाकर दूर कर सकते हैं प्रदूषण

डा. डे ने बताया कि इंटीग्रेटेड गैसीफिकेशन कंबाइंड साइकिल के जिस प्रोजेक्ट पर उन्होंने काम किया है, उसके अंतर्गत निकलने वाली गैसों से डाई मिथाइल ईथर तैयार किया जा सकता है। इसे हम घरेलू गैस व डीजल दोनों में मिला सकते हैं। इसे मिलाने से डीजल में प्रदूषण की मात्रा बहुत कम हो जाती है। क्योंकि डीजल में हायर हाइड्रोकार्बन समेत अन्य तत्व प्रदूषण फैलाते हैं। इसे मिलाने से ऐसे हानिकारक तत्व नहीं निकलेंगे। फिलहाल डाई मिथाइल ईथर का उत्पादन अभी महंगा है। इस पर अभी काम किए जाने की बहुत संभावना है।

दैनिक जागरण 22-07-2016

संदेह पर आस्ट्रेलिया ने नहीं दिया वीजा

- आस्ट्रेलिया सरकार को सामूहिक विनाश के हथियारों के प्रसार का संदेह
- त्रिवेंद्रम के रहने वाले इस छात्र ने सांसद शशि थरूर से लगाई थी गुहार

कानपुर, जागरण संवाददाता : आईआईटी कानपुर के एयरोस्पेस साइंस से इंजीनियरिंग की डिग्री हासिल करने वाले त्रिवेंद्रम के छात्र अनंथ शिवरामकृष्णनन मलाथी को आस्ट्रेलिया सरकार ने वीजा देने से इंकार कर दिया है। सरकार को छात्र पर सीधे तौर पर व अन्य तरीकों से सामूहिक विनाश के हथियारों के प्रसार करने का संदेह है। इसी संदेह के चलते वीजा के प्रार्थनापत्र को स्वीकार नहीं किया गया है। छात्र ने यूनिवर्सिटी आफ मेलबर्न से पीएचडी करने के लिए अस्थाई स्टूडेंट वीजा का आवेदन किया था। यूनिवर्सिटी की ओर से उसे इस पढ़ाई के लिए पूरी स्कालरशिप दी जा रही थी। 19 जुलाई को आस्ट्रेलियाई सरकार ने इस संबंध में छात्र को पत्र भी जारी कर दिया है।

छात्र ने अगस्त 2015 में वीजा के लिए आवेदन किया था लेकिन दस माह बीतने के बाद भी उसे वीजा नहीं मिला। इस पर उसने अपने संसदीय क्षेत्र के सांसद शशि थरूर को पत्र लिखकर वीजा दिलाने का निवेदन किया। छात्र के निवेदन पर उन्होंने आस्ट्रेलिया के उच्चायोग को पत्र लिया। उनके पत्र के जवाब में आस्ट्रेलिया सरकार के विभाग ने पत्र लिखकर यह सूचित किया कि ऐसा संदेह है कि छात्र सामूहिक विनाश के हथियारों के साथ किसी न किसी रूप में जुड़ा हो सकता है जिसके चलते उसे वीजा नहीं दिया जा सकता। इस मामले में जब छात्र से फोन पर बात करने का प्रयास किया गया तो उसका फोन स्विच ऑफ रहा।

आईआईटी में दिनभर चर्चा

संदेह के चलते आस्ट्रेलिया सरकार की ओर से छात्र को वीजा न दिए जाने की चर्चा गुरुवार को आईआईटी में आम रही। छात्र से लेकर शिक्षक सभी हैरान थे कि ऐसा कैसे हो सकता है लेकिन इस मसले पर कोई भी कुछ खुलकर बोलने को तैयार नहीं था। इस मामले में आईआईटी प्रशासन से जब बात की गई तो उन्होंने कहा कि इस मामले की उन्हें कोई जानकारी नहीं है।

दैनिक जागरण 22-07-2016

नए रिश्ते में आकर भावुक हो जाते हैं छात्र

रिलेशन ब्रेक, दे रहे जिंदगी भर का दर्द

कानपुर | वरिष्ठ संवाददाता

तकनीकी संस्थानों में ज्यादातर मौतें रिलेशन ब्रेकअप की वजह से होती हैं। इसके बाद अन्य छोटी-छोटी दिक्कतें जुड़कर छात्र-छात्राओं को डिप्रेशन में ले जाती हैं। इससे वह मौत की राह चुन लेते हैं। इसीलिए तकनीकी संस्थानों में छात्र-छात्राएं तनाव और मौत को गले लगा रहे हैं। इससे परिजन चिंतित न हों और छात्र-छात्राओं से बेहतर संवाद स्थापित करें। वह नए रिश्ते में आकर भावुक ज्यादा हो जाते हैं।

यह बातें आईआईटी की काउंसलर शर्मिष्ठा चक्रवर्ती ने अभिभावकों के सेशन में कही। उन्होंने कहा कि छात्र-छात्राओं के तनाव में आने की मुख्य वजह एकेडमिक नहीं बल्कि अन्य हैं। इससे निपटने के लिए उन पर ध्यान देने की जरूरत है। यह जांच पड़ताल में निकलकर आया है। ऐसे छात्र-छात्राएं अभिभावकों से संवाद कम कर देते हैं। आईआईटी मद्रास में लगातार दो मौतें होने के बाद प्रशासन सतर्क है। काउंसिलिंग सेल हेड प्रो. मानस घोराई ने बताया कि आईआईटी में आ रहे नए छात्र-छात्राओं के परिजन रैगिंग से लेकर हॉस्टल और पानी तक की जानकारी कर रहे हैं। रैगिंग को देखते हुए पूरे परिसर में पोस्टर चस्पा करा दिए गए हैं। आईआईटी में रैगिंग की कोई बात नहीं है।

200 छात्र-छात्राओं की टीम रखेगी निगाह : आईआईटी की काउंसलर शर्मिष्ठा ने कहा कि आईआईटी के छह हजार छात्र-छात्राओं पर निगाह रखने के लिए उनकी चार सदस्यीय टीम के साथ ही दो डॉक्टर और यूजी व पीजी के लिए 200-200 छात्र-छात्राएं तैनात किए गए हैं। वह छात्र-छात्राओं की मानीटरिंग करते हैं। अगर संबंधित छात्र-छात्राओं की हरकतें कुछ संदिग्ध लगती हैं तो उसकी काउंसिलिंग करते हैं। छात्र-छात्राओं की निगरानी के लिए टीम बनाई गई है।

अंग्रेजी टेस्ट से जानी नए छात्रों की स्थिति

आईआईटी में प्रवेश पाए छात्र-छात्राओं का अंग्रेजी डायग्नोसिस्ट टेस्ट कराया गया। एलएचसी हॉल में छात्र-छात्राओं ने टेस्ट दिया। हेड प्रो. घोराई ने बताया कि छात्र-छात्राएं बाहर से आते हैं। इसीलिए उनकी अंग्रेजी की स्थिति को देखा जाता है। अगर वह वीक होते हैं तो उनको आईआईटी के मुताबिक तैयार किया जाता है। इसीलिए टेस्ट कराया गया है। इसमें कई छात्रों की स्थिति गड़बड़ है, उसे दिखवाया जा रहा है।

स्काई फोटो में दिखी एकता की मिसाल

छात्र-छात्राओं ने मुख्य आडिटोरियम के बाहर मैदान में वाई-16 बनाया। एक साथ हाथ पकड़कर खड़े होकर बनाया गया वाई-16 का चिह्न पूरे आईआईटी में आकर्षण का केंद्र रहा। छात्र-छात्राओं ने ग्रुप फोटो भी खिंचवाया। तब आईआईटी का मैदान नए लुक में नजर आया। इसमें सभी छात्र-छात्राओं ने एकता की मिसाल पेश की है।

नुक्कड़ नाटक के साथ मूवी मस्ती

यूजी स्टूडेंट के लिए सीनियरों ने नुक्कड़ नाटक प्रस्तुत किया। नए पीजी स्टूडेंट के लिए मूवी नाइट आयोजित की गई। मोटिवेशनल के साथ ही आकर्षक फिल्में दिखाई गईं। कई अंग्रेजी फिल्में भी दिखाई गईं। मोहक नाटक प्रस्तुत करके नए छात्र-छात्राओं का वेलकम किया गया। इसे देखकर आडिटोरियम के बाहर मैदान में जमकर ताली बजीं।

पीजी के रजिस्ट्रेशन शुरू, यूजी के 24 से

रिपोर्टिंग के बाद आईआईटी प्रशासन ने छात्र-छात्राओं के रजिस्ट्रेशन कराने शुरू कर दिए हैं। गुरुवार से नए मास्टर्स छात्र-छात्राओं के रजिस्ट्रेशन शुरू हो गए हैं। इसके बाद उनको एक ईमेल आईडी भी बनाकर दी गई है। शुक्रवार रजिस्ट्रेशन का आखिरी दिन है। अभी तक पीजी के 840 स्टूडेंट आ चुके हैं। वहीं यूजी के छात्र-छात्राओं का रजिस्ट्रेशन 24 जुलाई से होगी। इसका नोटिस चस्पा कर दिया गया है। यूजी के भी करीब 20 छात्र आने बाकी हैं। एक छात्र एक्सीडेंट के चलते नहीं आया है।

भविष्य बनाने दें, तनाव न दें

मनोचिकित्सक डा. आलोक बाजपेई ने यूजी स्टूडेंट के साथ ही उनके परिजनों की क्लास ली। कहा कि अभिभावक और उनके रिश्तेदार छात्र-छात्राओं में भविष्य का प्रेशर न बनाएं। वह पहले से ही भविष्य को लेकर काफी चिंतित हैं। ऐसे में अगर उन पर तनाव डाला गया तो उनका भविष्य बिगड़ सकता है। इसीलिए छात्र-छात्राएं दोस्त बनाएं। दोस्ताना व्यवहार में उनसे बात करके उनके भविष्य का ताना-

यह बातें निकल कर आईं

- ट्यूशन फीस अगर वापस लेनी तो आयकर रिटर्न की कॉपी देनी होगी
- सेमेस्टर खत्म होने के बाद रिजल्ट को जरूर देखें
- आईआईटी में पानी की लगातार चेकिंग होती है
- शुरुआती सेमेस्टर के बाद छात्र-छात्राओं को देखने की जरूरत
- आईआईटी में छात्रों में स्ट्रेस नहीं, रेस्ट भी है, नेशनल कार्यक्रम में

हिन्दुस्तान

22-07-2016

आईआईटी काउंसिलिंग हुई खत्म, 90 सीटें बचीं

कानपुर | वरिष्ठ संवाददाता

आईआईटी में प्रवेश के लिए चल रही काउंसिलिंग खत्म हो चुकी है। अभी भी देश की 23 आईआईटी में लगभग 90 सीटें बची हुई हैं। अभी इस पर फैसला नहीं हो सका है। वहीं एनआईटी की भी 185 सीटें खाली हैं। देशभर के तकनीकी संस्थान में आवंटित जेईई की सीटों के लिए काउंसिलिंग भी शुरू हो गई है। इस बार पूरी प्रक्रिया एनआईटी पटना करा रहा है।

इस बार आईआईटी समेत देश के 92 तकनीकी संस्थानों में प्रवेश के लिए तीन की बजाए छात्र काउंसिलिंग पहली बार कराई गई थी। इसके बावजूद देश की 23 आईआईटी की सीटें खाली रह गई है। वहीं तकनीकी संस्थानों में जेईई की सुरक्षित सीटों के लिए प्रवेश प्रक्रिया शुरू हो गई है। सेंट्रल सीट एलाटमेंट बोर्ड (सीएसएबी) ने प्रवेश के लिए काउंसिलिंग शुरू कर दी है। इसके लिए ब्योरा जोसा की वेबसाइट पर डाल दिया गया है। काउंसिलिंग के लिए एक हजार प्रॉसेसिंग फीस जमा करनी होगी। 21 से शुरू हुई काउंसिलिंग 28 तक चलेगी। 29 जुलाई को रिजल्ट और 30 जुलाई को प्रवेश पाए छात्र-छात्राओं को रिपोर्टिंग करनी होगी। जेईई के नेशनल कोआर्डिनेटर केवी कृष्णा ने बताया कि एनआईटी की बची सीटों का उपयोग सीएसएबी की चल रही काउंसिलिंग में किया जा सकता है। आईआईटी की बची हुई 90 सीटों पर अभी तक फैसला नहीं हो सका है। उन पर जल्द से जल्द फैसला होगा।

185 सीटें खाली एनआईटी में तकनीकी संस्थान में जेईई की आवंटित सीटों के लिए सैब की काउंसिलिंग शुरू

29 जुलाई को देश भर के संस्थानों का आएगा रिजल्ट, 30 जुलाई को सबंधित संस्थान में जाकर रिपोर्टिंग करनी होगी

हिन्दुस्तान 22-07-2016

आईआईटी एसोसिएट से ऑस्ट्रेलिया को खतरा

कानपुर | वरिष्ठ संवाददाता

हद हो गई

- आस्ट्रेलिया ने एसोसिएट से अशांति फैलाने की बात कही
- शशि थरूर ने विदेश मंत्री को लिखा पत्र, राहत दिलाने का अनुरोध

आईआईटी के रिसर्च एसोसिएट से आस्ट्रेलिया को खतरा है। खतरे की आशंका जताते हुए रिसर्च एसोसिएट को आस्ट्रेलिया सरकार के डिपार्टमेंट ऑफ इमिग्रेशन एंड बार्डर प्रोटेक्शन ने वीजा देने से इंकार कर दिया है। इस मामले में पूर्व विदेश मंत्री शशि थरूर ने विदेश मंत्री को पत्र लिखकर छात्र को राहत दिलाने का अनुरोध किया है।

केरला के त्रिवेंद्रम मवरथल्ला निवासी अनंत शिव रामाकृष्णन ने आईआईटी कानपुर से एरोस्पेस में एमटेक किया है। वह आईआईटी में रहकर प्रोजेक्ट में बतौर रिसर्च एसोसिएट काम कर रहे है। अनंत को यूनिवर्सिटी ऑफ मेलबर्न से पीएचडी करने का ऑफर था। इसे स्वीकार करते हुए अगस्त 2015 में अनंत ने स्टूडेंट वीजा का आवेदन किया था।

10 महीने बीतने के बावजूद जब अनंत को वीजा नहीं मिला तो उसने आस्ट्रेलियन हाई कमिश्नर से लिखित जानकारी मांगी। बड़ी मशक्कत के बाद हाई कमिश्नर का जवाब काफी चौंकाने वाला था। इसमे उन्होंने लिखा कि अनंत

अनंत शिव रामाकृष्णन।

से अशांति फैलाने का खतरा है। इसीलिए उनको वीजा नहीं दिया जा सकता है। वीजा न मिलने से परेशान अनंत ने पूर्व विदेश राज्यमंत्री शशि थरूर को मामले की जानकारी दी। शशि थरूर ने 16 जुलाई को विदेश मंत्री सुषमा स्वराज को पत्र लिखकर हस्तक्षेप करने का अनुरोध किया है। आईआईटी प्रवक्ता प्रो. सुधीर मिश्रा ने बताया कि अनंत ने आईआईटी से एमटेक किया है। वीजा के बारे में कोई जानकारी नहीं है।

हिन्दुस्तान 22-07-2016

ये आईआईटी है मेरी जान

सपनों को मिलेगी उड़ान

नई शुरुआत

आईआईटी में नए छात्र-छात्राओं ने खरीदीं साईकिलें।

किसी ने तकिया खरीदा तो वाटर कूलर भी साथ ले गया।

पढ़ाई के साथ आराम का भी किया छात्रों ने पूरा इंतजाम।

पहला दिन

कानपुर | वरिष्ठ संवाददाता

कालेज का पहला दिन स्टूडेंट्स के सपनों की उड़ान को पंख देने में अहम भूमिका निभाता है। प्रत्येक कालेज का प्रयास होता है कि उसका छात्र अपने कैलीबर को पहचान कर तैयारी करे। कालेज फर्स्ट डे से इस पर मेहनत करता है। बच्चे की प्रतिभा को पहचान कर उसे तराशना उसका पहला लक्ष्य होता है।

जेईई एडवांस जैसे कठिन एग्जाम को क्रेक कर, लाखों छात्रों के बीच से निकलकर गुरुवार को एडमिशन लेने पहुंचे उन हौनहारों के लिए इंडियन इंस्टीट्यूट आफ टेक्नोलॉजी (आईआईटी) में यही भूमिका तैयार कर दी गई। यहां आयोजित ओरिएंटेशन में आईआईटी मैनेजमेंट ने साफ कर दिया कि वे देश का भविष्य हैं, अभिभावक अब उनसे दूर हो जाएं। इनके सपनों को यहां उड़ान मिलेगी। देश के कौने-कौने से आईआईटी पहुंचे अलग भाषा अलग वेश के नौजवानों के चेहरों का नूर देखते ही बन रहा था। यहां फर्स्ट डे स्टूडेंट्स से उनके बारे में तमाम लिखित जानकारियां ली गईं। मैनेजमेंट ने बताया कि पहले दिन स्टूडेंट्स के हौसलों की उड़ान को परखा जाता है। उनको आईआईटी में एडमिशन का महत्व बताया जाता है। छात्रों से उनकी कमजोरियों को दूर करने पर चर्चा की जाती है। आईआईटी एक्स्ट्रा क्लासेज के जरिए विनिंग पोटेंशियल डेवलप करता है। उनमें आत्मविश्वास पैदा किया जाता है कि वह कुछ खास हैं।

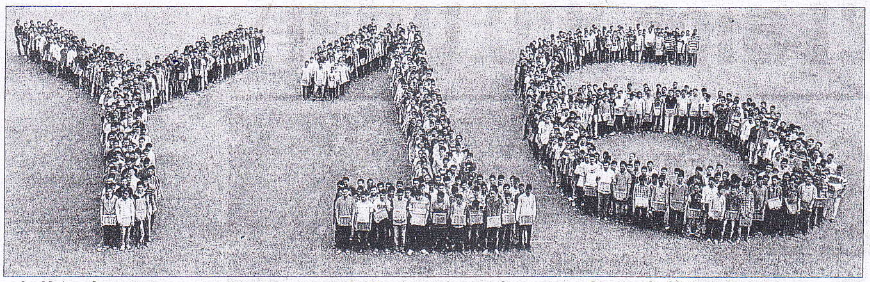

आईआईटी में पहली बार आए नए छात्र-छात्राओं ने गुरुवार को मुख्य आडिटोरियम के बाहर मैदान में वाई-16 बनाया। यह चिह्न पूरे आईआईटी में आकर्षण का केंद्र रहा। • हिन्दुस्तान

ऊंचाई के लिए फेल व सफलता का अंतर जानें

कानपुर | वरिष्ठ संवाददाता

प्रो. मन्ना की क्लास

- कुछ अलग करने की दी सीख, यूजी के छात्र-छात्राओं का ओरिएंटेशन कार्यक्रम शुरू
- पहली बार आईआईटी पहुंचे यूजी के छात्र-छात्राओं में निदेशक और डीन ने भरा जोश

ओरिएंटेशन में जानकारी देते प्रो. मन्ना।

ऊंचाई पर पहुंचने के लिए फेल और सफलता के बीच का अंतर समझना होगा। आपमें काफी क्षमताएं हैं और इन क्षमताओं का उपयोग करके इतिहास बना सकते हैं। इसके लिए समस्या को डिफाइन करके देखना होगा कि आप कहां खड़े हैं। आईआईटी में आकर जिन्दगी का लुत्फ उठाएं। कुछ ऐसा करें, जो सबसे अलग हो। यह बातें यूजी ओरिएंटेशन प्रोग्राम के दौरान आईआईटी के निदेशक प्रो. इंद्रनील मन्ना ने कहीं।

मुख्य ऑडिटोरियम में जेईई एडवांस पास करके आईआईटी पहुंचे छात्र-छात्राओं का गुरुवार को निदेशक और डीन से संवाद कराया गया। निदेशक प्रो. मन्ना ने कहा कि अब समय आ गया है, परिजनों से अलग होकर दोस्त बनाने का। इंट्रैक्शन से ज्ञान बढ़ता है। सभी खास हैं इसीलिए आईआईटी में हैं। डीन प्रो. एआर हरीश ने कहा कि आईआईटी में चार वर्ष मस्ती करनी है। इसी मस्ती में कभी भी औसत लक्ष्य को नहीं पकड़ना है, बल्कि उत्कृष्ट लक्ष्य हासिल करना है। इसके लिए प्रतिदिन पढ़ाई, प्रतिदिन क्लास और क्लास में प्रश्न पूछना, तीन मूलमंत्र हैं। नए छात्र-छात्राएं आईआईटी कानपुर के साथ ही देश का भविष्य हैं। इसीलिए यहां सभी कुछ छात्र-छात्राएं करते हैं। पढ़ाई के साथ ही अन्य एक्टिविटी भी करें लेकिन बैलेंस बनाकर। तभी सफलता मिलेगी। काउंसिलिंग हेड प्रो.मानस घोराई ने कहा कि आईआईटी में आना बेहतर विकल्प है। चार वर्ष में अपने दायित्व को समझें। बेहतर भविष्य आपका इंतजार कर रहा है। प्रो. वाईएन मोहपात्रा ने कहा कि दायित्व समझें तभी सफलता मिलेगी।

ये दिए गए टिप्स

- एग्जाम में कोई भी बेहतर कर सकता है, जो भी पढ़ें मन लगाकर पढ़ें
- क्लासरूम्स सबसे बेहतर ट्यूशन है यहां कॉन्सेप्ट समझ गए तो किसी भी ट्यूशन की जरूरत नहीं
- पढ़ने के लिए घंटे मैटर नहीं करते, ध्यान लगाकर जो पढ़ो वह बेहतर याद रहता है
- जितना हो सके चैप्टर्स और टॉपिक्स को नोट्स बनाकर पढ़ें
- रोजाना एक सब्जेक्ट की तैयारी न करें। सब्जेक्ट्स को शफल करते रहें
- सभी छात्र अपने कॉन्सेप्ट को क्लियर कर सब्जेक्ट्स के टॉपिक्स की तैयारी करें, तभी सफल होंगे
- रिजल्ट से कभी डीमोरलाइज नहीं होना चाहिए। इसे भूलकर आगे मजबूत इरादों के साथ पढ़ाई करें

पापा कहते हैं बड़ा...

आईआईटी में गुरुवार को यूजी स्टूडेंटस के पैरेंटस मैनेजमेंट से वार्ता करते हुए।

परिजन धैर्य रखें, अब छात्रों को प्रेशर झेलना

मेन आडिटोरियम में 827 छात्र-छात्राओं के परिजनों से खचाखच भरे हाल में निदेशक प्रो.इंद्रनील मन्ना ने कहा कि माता-पिता का सपना आज सच हुआ है। बेटा और बेटी अगर सफल हुई है तो उसे यह स्थान बरकरार रखना होगा। इसीलिए परिजन बच्चों को जागरुक करें, उनको अभी सफल होने के लिए 100 परीक्षाएं देनी हैं। अभिभावक छात्र-छात्राओं के सबसे बड़े शुभचिंतक हैं, इसीलिए उन पर फोकस करें। आईआईटी कानपुर में सब कुछ छात्र-छात्राएं करते हैं। इसीलिए परिजन धैर्य रखें। यह समय छात्र-छात्राओं के बनकर पैरों पर खड़े होने का है। इसीलिए उनको कम से कम फोन करें, लेकिन जानकारी सभी रखें। अब छात्र-छात्राओं को देश के लिए प्रेशर झेलने वाला बनना है।

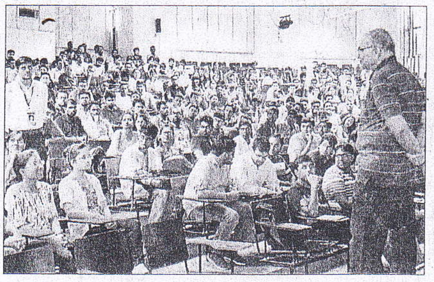

सभागार में नए छात्र-छात्राओं के ओरिएंटेशन प्रोग्राम में दी गईं कई जानकारी।

परिजनों ने कर डाली सवालों की बौछार

इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी के अंडर ग्रेजुएट स्टूडेंटस के ओरिएंटेशन प्रोग्राम में गुरुवार को पहली बार आईआईटी पहुंचे छात्र-छात्राओं के परिजनों से निदेशक और डीन ने संवाद स्थापित किया। परिजनों ने यहां सवालों की बौछार कर दी। फीस, रैगिंग से लेकर हॉस्टल और स्वच्छ पानी तक को लेकर सवाल पूछ डाले। इसका निदेशक और डीन ने काफी उत्साहित अंदाज में जवाब दिया। डीन स्टूडेंट वेलफेयर प्रो. एआर हरीश ने कहा कि आपके बच्चे आईआईटी के ब्रांड एम्बेसडर हैं। यहां पर उनकी छुपी हुई प्रतिभा को निकालकर उसे विकसित किया जाता है। जिससे इसका उपयोग देश के लिए हो सके। साथ ही उनसे दोस्ताना माहौल में ही चार साल आगे बढ़ने की ताकीद रहती है, जिससे उनका भविष्य बिना तनाव के आगे बढ़ेगा।

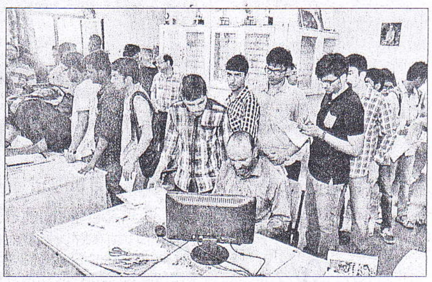

आईआईटी कार्यालय में अपनी कागजी कार्रवाई पूरी करते नए छात्र-छात्राएं।

सामाजिक समस्याओं को जानें और समझें छात्र

आईआईटी के एल-सात में सोशल अवेयरनेस पर नए छात्र-छात्राओं को प्रो. एचसी वर्मा ने टिप्स दिए। वर्मा ने कहा कि पढ़ाई-लिखाई के साथ सामाजिक समस्याओं को समझना जरूरी है। अगर सामाजिक समस्याओं को नहीं समझा तो पढ़ने के बाद जो काम करेंगे वह समाज के लिए उपयोगी नहीं होगा। इसीलिए सामाजिक समस्याओं की जानकारी आईआईटियन्स को होनी चाहिए। इससे नए-नए विचार आते हैं। उस पर काम करने से समाज को फायदा मिलता है। प्रो.वर्मा ने आईआईटी में चल रहे सामाजिक काम और संगठनों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने कहा कि इच्छुक नए छात्र-छात्राएं चल रही समितियों में शामिल होकर सामाजिक समस्याओं को जानकर इस पर काम करके उनको दूर कर सकते हैं। इससे समाज को फायदा होगा।

हिन्दुस्तान 22-07-2016

आईआईटीयन को वीजा देने से आस्ट्रेलिया का इनकार

अमर उजाला ब्यूरो

- हथियारों का प्रसार होने की अजीबोगरीब आशंका जता रिजेक्ट किया आवेदन
- केरल का रहने वाला है स्टूडेंट, वहां के तमाम युवाओं के आईएस से जुड़ने की आशंका हो सकती है एक कारण

कानपुर। हथियारों का प्रसार होने की अजीबोगरीब आशंका जताकर आस्ट्रेलिया सरकार ने आईआईटी कानपुर के रिसर्च स्कॉलर अनंत शिवा रामाकृष्णन मलाथी (केरल) को वीजा देने से इनकार कर दिया है। वीजा आवेदन का फार्म रिजेक्ट करके सूचना भेज दी। अनंत ने अब कांग्रेस सांसद शशि थरूर से मदद मांगी और वीजा दिलवाने का आग्रह किया। थरूर ने विदेश मंत्री सुषमा स्वराज को पत्र लिखकर इस मामले में हस्तक्षेप करने और आईआईटियन को वीजा दिलवाने की मांग की है।

रिसर्च स्कालर अनंत

त्रिवेंद्रम केरल के रहने वाले अनंत शिवा रामाकृष्णन मलाथी ने आईआईटी कानपुर के एयरो स्पेस इंजीनियरिंग डिपार्टमेंट से बीटेक की पढ़ाई पूरी की और रिसर्च प्रोजेक्ट (रिसर्च एसोसिएट के रूप में) पर काम करने लगे। इसी बीच आस्ट्रेलिया के यूनिवर्सिटी ऑफ मेलबर्न से पीएचडी करने का आवेदन फार्म भरा। यह आवेदन फार्म स्वीकार हो गया। अनंत को मेलबर्न से पीएचडी की फ्री सीट मिल गई। इसके बाद अनंत ने 19 अगस्त 2015 को वीजा के लिए आवेदन फार्म भरा। इस पर ई-मेल चले और 11 महीने का समय बीत गया लेकिन वीजा नहीं मिल सका। 19 जुलाई 2016 शेष पेज 5 पर

आईआईटीयन को वीजा...

को आस्ट्रेलिया सरकार के डिपार्टमेंट ऑफ इमिग्रेशन एंड बार्डर प्रोटेक्शन ने अनंत शिवा को वीजा देने से इंकार कर दिया। आस्ट्रेलिया सरकार ने इसकी जानकारी ई-मेल से दी। वीजा न देने का जो प्रमुख कारण बताया गया वह चौंकाने वाला है। आस्ट्रेलिया सरकार ने कहा है कि अनंत के आस्ट्रेलिया आने और वहां रहने से हथियारों का प्रसार नहीं होगा, यह आस्ट्रेलिया सरकार तय नहीं कर पा रही है। यह जनहित से जुड़ा मसला है। ऐसे में वीजा नहीं दिया जा सकता है। अनंत शिवा ने त्रिवेंद्रम केरल के सांसद शशि थरूर से मदद मांगी है। कहा कि उनके (अनंत) खिलाफ एक भी एफआईआर या फिर आपराधिक इतिहास नहीं है। इसके बावजूद हथियारों के प्रसार की आशंका का हवाला देकर वीजा देने से इंकार कर दिया। अब थरूर ने विदेश मंत्री को पत्र लिखकर कहा है कि आस्ट्रेलिया सरकार ने जिस आधार पर वीजा देने से इंकार किया है, वह गंभीर है। इस मामले में विदेश मंत्रालय को तत्काल हस्तक्षेप करके वीजा दिलवाना चाहिए।

कहीं आईएसआईएस का भय तो नहीं: केरल के तमाम पढ़े-लिखे युवाओं के आतंकी संगठन आईएसआईएस में शामिल होने की आशंका जताई जाती रही है। कुछ युवा और परिवार लंबे समय से गायब भी हैं। इनमें ज्यादातर हाई एजुकेटेड हैं। अनंत के वीजा प्रकरण को भी इस मामले से जोड़कर देखा जा रहा है। एक्सपर्ट का कहना है कि आस्ट्रेलिया सरकार ने हथियारों के प्रसार का हवाला देकर वीजा देने से मना किया है। इसका मतलब यही है कि आस्ट्रेलिया सरकार आईएसआईएस के खतरों को लेकर अलर्ट है। वह अनंत की स्क्रीनिंग भी उसी दायरे में रखकर कर रही है क्योंकि वह केरल का रहने वाला है।

अमर उजाला 22-07-2016

मिसाल बाप ने मकान बेच, खेत गिरवी रखकर कराई बेटे के स्पाइनल कॉर्ड की तीन सर्जरी

जिंदगी की जंग जीत आईआईटी पहुंचा अंकित

अमर उजाला ब्यूरो

कानपुर। तीन बार स्पाइनल कॉर्ड की सर्जरी कराने वाले भीतरगांव के साढ़ा गांव (कानपुर नगर) के अंकित शर्मा को आईआईटी कानपुर के केमिकल इंजीनियरिंग डिपार्टमेंट में एडमिशन मिल गया है। अंकित के पिता राज किशोर शर्मा बढ़ई हैं। बेटे के इलाज के लिए उन्होंने घर बेच दिया। पांच साल के लिए चार बीघा जमीन गिरवी रख दी। अब बेटे को आईआईटी में एडमिशन मिल गया है। इससे राज किशोर गदगद हैं। वह कहते हैं कि जिंदगी के संघर्ष का इनाम अब मिला है।

जॉइंट एंट्रेंस एग्जाम (जेईई) एडवांस 2016 में ओबीसी के फिजिकली

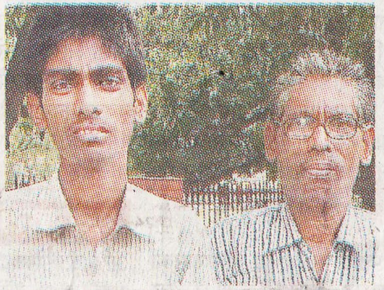

पिता राजकिशोर के साथ अंकित।

डिसेबिल्ड कोटे से आल इंडिया 93वीं रैंक हासिल करने वाले अंकित शर्मा ने केमिकल इंजीनियरिंग में एडमिशन लिया। अंकित को हॉस्टल नंबर-5 में कमरा मिला है। पिता के साथ गुरुवार को आईआईटी कैंपस पहुंचे अंकित ने ओरिएंटेशन प्रोग्राम में हिस्सा लिया। साथ ही 'अमर उजाला' से विशेष बातचीत में कठिन दिनों को याद किया। बताया कि सात साल पहले मां सीमा शर्मा का बीमारी से निधन हो गया था। वर्ष 2010 में कक्षा 8 की पढ़ाई के दौरान साइकिल से गिरा और कमर के नीचे का पूरा हिस्सा (पैर सहित) सुन्न हो गया। पूरी तरह से बिस्तर पर आ गया। संघर्ष दो साल तक चलता रहा। पिता ने ही कपड़े बदले, नहलाया और साफ-सफाई की। डॉक्टरों ने स्पाइनल कॉर्ड के ऑपरेशन की सलाह दी। इस पर काफी खर्च आना था, इसलिए पिता ने गांव का घर बेच दिया और पनकी में किराए पर रहने लगे। पहली सर्जरी हैलट अस्पताल में हुई लेकिन बहुत आराम नहीं मिल सका। इसके बाद पिता ने गांव की चार बीघा जमीन गिरवी रख दी। स्पाइनल कॉर्ड की दो और सर्जरी निजी अस्पताल में हुई। वर्ष 2012 से कुछ आराम मिला लेकिन ठीक से चला नहीं जा रहा था। इसके बावजूद हिम्मत की और पढ़ने का फैसला किया। वर्ष 2013 में यूपी बोर्ड के हाइस्कूल (90.1 फीसदी) की पढ़ाई पूरी की। सीवी रमन इंटर कॉलेज पनकी से वर्ष 2015 (91 फीसदी) से इंटरमीडिएट किया। पहले प्रयास में सफलता नहीं मिली, फिर वर्ष 2016 में जेईई एडवांस का पेपर दिया और सेलेक्शन हो गया। अब आईआईटी से बीटेक करना है। पिता के संघर्ष याद हैं। मन लगाकर पढ़ाई करेंगे।

फीस की भी मदद

मकान बेचने और खेत गिरवी रखने वाले राज किशोर के पास अंकित की फीस जमा करने को पैसा नहीं था। इसकी जानकारी कुछ लोगों को मिली। उन्होंने पैसा जुटाया और सिक्योरिटी फीस जमा कराई। अंकित के चार साल की पढ़ाई की फीस का इंतजाम भी किया लेकिन नाम का खुलासा करने से इनकार कर दिया।

अंकित ने जिंदगी से हार नहीं मानी। मेहनत और संघर्ष करके आगे बढ़े। अब सफलता मिल गई है। इसे मिसाल के तौर देखा जाना चाहिए। आईआईटी में अंकित को हर सुविधा उपलब्ध कराई ज़ाएगी। - प्रो. इंद्रनील मन्ना, निदेशक आईआईटी

अमर उजाला

22-07-2016.

Gutsy student is back on IIT-K campus

Abhinav.Malhotra
@timesgroup.com

Kanpur: Physically challenged student Rohit Kumar of Gaya in Bihar, who had cracked JEE Advanced (AIR 62 in person with disability category) in his first attempt last year and got shortlisted for preparatory course at IIT-Roorkee, on Thursday arrived the IIT-Kanpur campus to take admission in BTech course.

Students who are weak in physics, chemistry and maths have to clear the preparatory course before joining the IIT of their choice.

TOI

Physically challenged student Rohit Kumar of Gaya came back to the campus after clearing the preparatory course

Last year when Rohit had come to IIT-Kanpur from Gaya, he had hogged the limelight as he had walked on his knees into the main auditorium of the institute. He was cheered by IIT-K faculty members, staffers and students. Rohit had managed to pay his admission fee at the IIT through voluntary contributions by his relatives and some friends.

TOI had last year highlighted the saga of Rohit's determination and hard work and a number of readers had offered help.

On Thursday, Rohit was seen charged with excitement and brimming with confidence although he could not buy a tricycle (for the physically challenged) for himself to move around on the campus.

His elder brother Omprakash said that though Rohit is in dire need of a tricycle, they do not have enough money to buy one. He said determination has brought Rohit back to the campus.

Rohit is son of a small-time weaver who earns Rs 300 daily and his family of eight lives in a rented house in Gaya.

Talking to TOI, Rohit said, "I have successfully completed my preparatory course which was conducted at IIT-Roorkee. I was offered IIT-Kanpur to pursue BTech and, therefore, I have come back to this campus. I have completed my documentation work and I have been allotted a hostel room. I would be studying at the material science department."

Counselling service head of IIT Kanpur, Prof MK Ghorai, said that he has come to know about Rohit and all possible help would be provided to him.

Campus comes alive with arrival of newcomers

Times News Network

Kanpur: The campus of IIT-Kanpur came alive with the coming of the new batch of undergraduate students. On Thursday, the orientation programme for students and their parents was conducted. The students were told about the life on the campus, extra-curricular activities and facilities available for them. The parents were told that they should not pressurise students to score high.

After the conclusion of the orientation programme, the second year students (seniors) made the first year students stand in the auditorium and formed symbol Y2016 by human chain where Y represented year-2016. This meant that this batch of UG students had taken admission in BTech and Bachelor of Science (BS) course 2016.

In order to interact with the new students, the seniors made them raise slogans and cracked jokes. Amid fanfare, the new students were welcomed by the IIT-Kanpur authorities during the orientation programme. The students were congratulated for becoming part of IIT-Kanpur. They were also administered oath by the IIT-Kanpur authorities for giving their best in both academics and sports. They were also asked to take oath about maintaining the image of the institute.

IIT-K director Indranil Manna addressed the students about the importance of time management and discipline. He also told them to work hard and to enjoy their stay on the campus. Manna said that the students who have moved out of their homes for the first time will feel nostalgic but it will not take much time to make new friends and adjust to the institute's routine.

Head of counselling service MK Ghorai said while interacting with parents, "You have given us boys for a four years and we will convert them into men." He asked parents to monitor the changes in the personality of wards after every six months when they come home.

The Times of India 22-07-2016